

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

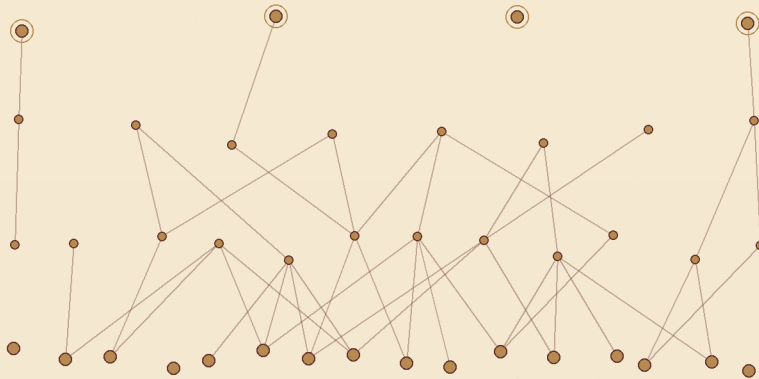
खण्ड ३५

पञ्जी-प्रबन्ध

सिद्धान्त, वंशावली

आ प्रमाण-विवेक

Decoding the Panji of Mithila · Volume 1



सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

विदेह

ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३५

पञ्जी-प्रबन्ध : सिद्धान्त, वंशावली आ प्रमाण-विवेक

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

आधारग्रन्थ : Decoding the Panji of Mithila, Volume I

विदेह • प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

प्रकाशनाधिकार आ पाठस्रोत

मूल शोध-ग्रन्थ : गजेन्द्र ठाकुर। सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार।

मूल ग्रन्थक उपलब्ध अधिकार-विवरण अनुसार © गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर।

समीक्षाक आधार Decoding the Panji of Mithila क सम्बन्धित मूल ग्रन्थ अछि। पञ्जी-पोथीक प्राचीन तिरहुता छवि अथवा स्वतंत्र पाण्डुलिपिक प्रत्यक्ष प्रमाणपरीक्षण एहि संस्करणमे दावा नहि कएल गेल अछि।

प्रथम मूल ग्रन्थक आँकड़ा-परिशिष्ट प्रथम मूल पुस्तकक सहायक अनुलग्नक अछि; ओकर पाँतिसभ स्वतः प्रमाणित मूल पञ्जीक प्रत्यक्ष प्रतिलिपि नहि।

जाल-पता : <https://www.videha.co.in/>

प्रतिरूप : <https://videha-ejournal.github.io/videha/>

अनुक्रमणिका

अध्याय १ — वंशक्रम आ आनुवंशिकी : उपमानक सामर्थ्य आ सीमा.....	6
अध्याय २ — दोसर अध्याय : अभिलेखीय वंशविज्ञान आ जैविक दावाक परीक्षण.....	7
अध्याय ३ — तेसर अध्याय : जाति, विवाह आ इतिहासक प्रश्न.....	8
अध्याय ४ — वंशवर्गीकरण, विवाह-गणना आ आनुवंशिक उपमानक प्रमाण-सीमा.....	11
अध्याय ५ — सामाजिक वंशरचना : श्रेणी, सत्ता आ स्त्रीक दर्ज उपस्थिति.....	13
अध्याय ६ — अभिलेखीय न्याय, सामाजिक निषेध आ ऐतिहासिक वृत्तान्तक पुनःपरीक्षण.....	15
अध्याय ७ — समग्र मार्गदर्शिका : पञ्जी-व्यवस्थाक परिचयसँ पुनर्निर्माण धरि.....	17
अध्याय ८ — स्त्री, दूषण आ सामाजिक प्रतिष्ठाक राजनैतिक अर्थ.....	18
अध्याय ९ — प्राचीन पञ्जीक प्रथम पृष्ठसमूह : ग्राम आ मूलक अन्तर.....	19
अध्याय १० — प्रथम खण्डक विस्तारित पृष्ठ : विवाह-उपसंहारक साक्ष्य.....	20
अध्याय ११ — राजकीय साक्ष्य, पाण्डित्यक पदवी आ आधुनिक समय.....	21
अध्याय १२ — उटीपक सहायक टिप्पणी : जीवित सम्बन्धजालक पुनर्पाठ.....	22
अध्याय १३ — Genome Mapping Volume I: Analytical Report on Mithilak Pañjee Prabandha.....	23
अध्याय १४ — Pampilā Pañjī, Khaṇḍa 3 — Nāgarāma: Comprehensive Analytical Report (Volume I).....	25
अध्याय १५ — Pampilā-Varga Pañjikā, Khaṇḍa 3 (Nāgramī): Entries 226–358 (Volume I).....	27
अध्याय १६ — Pañjī Prabandha, Khaṇḍa 3 (Nāgramā): Blocks 359–466 (Volume I).....	29

अध्याय १७ — Panji Prabandha of Mithila: Genealogical Mapping (450 AD – 2009 AD), Comprehensive Research Report.....	31
अध्याय १८ — The Dooshan Pañjī of Mithila: A Comprehensive Scholarly Report.....	33
अध्याय १९ — Dūṣaṇa Pañjī — The Black Book: A Complete Study from Genealogical Theories.....	35
अध्याय २० — Dooshan Panji: An Interdisciplinary Research Report through Anthropological, Sociological, and Genealogical Lenses.....	37

सम्पादकीय भूमिका

पञ्जीक व्याख्या करैत व्यक्ति, ग्राम, गोत्र, मूल, सन्तति, विवाह, मातृक आ उपाधिसूचक पद अलग-अलग पढब आवश्यक अछि। मूल अंग्रेजी ग्रन्थक व्याख्या आ ऐतिहासिक पञ्जीक स्वतन्त्र प्रत्यक्ष पाठ एकहि प्रमाणस्तर नहि। एहि समीक्षामे उपलब्ध मूल पुस्तकक दावाक तर्कसंगति, पाठ-विभाजन, प्रमाणक सीमा आ सामाजिक व्याख्याक औचित्य जाँचल गेल अछि।

पहिने स्रोतमे लिखल कथन, तकर बाद व्याख्यात्मक अन्वय, आ अन्तमे ऐतिहासिक अनुमान—ई क्रम निर्णायक अछि। पञ्जीक वंशस्मृतिसँ सामाजिक सम्बन्धक अध्ययन सम्भव अछि; मात्र एहि पाठमात्रसँ जैविक डीएनए-परीक्षणक प्रमाण नहि बनैत।

अध्यायवार मूल अध्ययन

अध्याय १ — वंशक्रम आ आनुवंशिकी : उपमानक सामर्थ्य आ सीमा
पहिल अध्याय पञ्जीकें वंशपरम्परा, गोत्र, मूल, बीजी पुरुष, मातृसम्बन्ध
आ विवाह-निषेधक संयुक्त ज्ञान-व्यवस्था मानैत अछि। एहि प्रस्तावक
बौद्धिक महत्त्व ई अछि जे वंशावली केवल नामावली नहि, सम्बन्धक
बहुस्तरीय अभिलेख बनैत अछि। उतेढ़ आ सपिण्ड सम्बन्धक गणना एतय
पाठ-पद्धतिक केन्द्रीय उपकरण अछि। मुदा मूल पाठमे व्यवहृत 'जीनोम
मैपिंग' शब्दकें वैज्ञानिक अर्थमे प्रत्यक्ष आनुवंशिक अनुक्रमण नहि मानल
जा सकैत अछि। पारिवारिक नातेदारीक दस्तावेज आ प्रयोगशालामे
जाँचल आनुवंशिक तथ्य दू अलग प्रमाणवर्ग छथि।

अध्यायमे पुरुषवंशक क्रम आ मातृपक्षक विवाह-निषेध दुनू एक संग आएल
अछि। एही कारणेँ पञ्जीक भीतर स्त्रीक उपस्थिति केवल वंशक किनारपर
नहि, विवाह-निर्णयक अविच्छिन्न शर्तक रूपमे भेटैत अछि। तथापि
मातृसम्बन्धक उपयोग आ स्त्रीक स्वतन्त्र अभिलेखीय स्वरमे अन्तर अछि।
विवाह-निषेधक गणनासँ स्त्रीक जीवनी, सम्पत्ति वा निर्णय-अधिकार अपने
आप सिद्ध नहि होइत अछि। ई विभाजन कायम राखब सामाजिक
इतिहासक लेल आवश्यक अछि।

पुस्तक ४५० ईस्वीसँ २००९ धरि दीर्घ काल-अवधिक दावा करैत अछि,
संगहि हरिसिंहदेवक कालमे संस्थागत विन्यासक चर्चा करैत अछि। दुनू
कथन एक नहि : पुरान वंशस्मृतिक काल, सुरक्षित पाण्डुलिपिक तिथि आ
राजकीय संस्थाक स्थापना पृथक् साक्ष्य माँगैत अछि। पञ्जीक पाठभितर
देल तिथि आ ऐतिहासिक निष्कर्षक बीच आलोचनात्मक अन्तराल
देखाओल जाएब तँ एहि अध्ययनक प्रमाण-शक्ति आरो बढत।

अध्याय २ — दोसर अध्याय : अभिलेखीय वंशविज्ञान आ जैविक दावाक परीक्षण

दोसर अध्याय पञ्जी-अध्ययनक पाँच परस्पर सम्बद्ध क्षेत्र सामने अनैत अछि : दस्तावेजी वंशावली, आनुवंशिक वंशविज्ञान, सामाजिक-विधिक सम्बन्ध, नृवंशविज्ञान आ पारम्परिक वंश-व्यवस्था। ई वर्गीकरण उपयोगी अछि, कारण एहिसँ पञ्जीकें खाली धार्मिक वा विवाह-व्यवहारक प्रश्न धरि सीमित नहि राखि, बहुविषयक शोधक सामग्री बनाओल जा सकैत अछि। मुदा बहुविषयक तुलनाक अर्थ सभ अनुशासनक प्रमाणकें एक-दोसराक पर्याय बना देब नहि अछि।

अध्याय 'पेडिग्री कोलैप्स'क समस्या, गोत्र आ सपिण्ड निषेध, बीजी पुरुष, मूल आ शाखाक सम्बन्ध देखबैत अछि। एहि गणनाकें व्यवहारिक वंश-मापन कहब न्यायसंगत अछि; किन्तु आनुवंशिक समानता वा विवाहसँ होमयवला जैविक परिणामक परिमाण पर प्रत्यक्ष निष्कर्ष निकालबाक लेल पृथक् जीववैज्ञानिक नमूना चाही। आधुनिक डीएनए-आधारित पद्धति नहि अपनाओल गेल सामग्रीक निष्कर्षकें ओकर सीमामे राखल जाए।

हरिसिंहदेव, पञ्जीकार आ प्राचीन विद्वानक ऐतिहासिक उल्लेख अध्यायकें कालक्रमसँ जोड़ैत अछि। एहि उल्लेखक साहित्यिक महत्त्वक संग शोध-पद्धतिक चुनौती सेहो अछि : एकटा वंशानुक्रममे प्राचीन नाम भेटब आ ओहि व्यक्तिक अस्तित्व, काल तथा एकहि पहिचानक स्वतन्त्र पुष्टि होयब दू पृथक् बात अछि। तिथि, वंशपाँति, पाण्डुलिपिक स्तर आ सम्पादकीय पुनर्निर्माण अलग देखाओल जाएब चाही।

अध्याय ३ — तेसर अध्याय : जाति, विवाह आ इतिहासक प्रश्न
 तेसर अध्याय पञ्जी-व्यवस्थाकें गणना, विवाह-अनुशासन आ राजकीय-सामाजिक संगठनक अन्तर्सम्बन्धसँ पढ़ैत अछि। हरिसिंहदेवक शासन, पञ्जीकारक संस्थागत भूमिका, गोत्र-प्रवर, मूल-शाखा आ विद्वानक वंशपरम्परा एकटा पैघ ऐतिहासिक आख्यान बनेबाक प्रयास करैत अछि। ई प्रयास महत्त्वपूर्ण अछि, कारण अभिलेखक तकनीकी पदकें राजनीतिक आ सामाजिक प्रयोगसँ अलग रखला पर ओकर इतिहास अधूरा रहि जाइत अछि।

‘क्रोमोसोम’ वा ‘आनुवंशिक अवनति’ सन आधुनिक वैज्ञानिक भाषा अध्यायक एक मुख्य जोखिम अछि। पञ्जीक सपिण्ड-निषेध सामाजिक रूपें लिखित वंशस्मृतिपर आधारित अछि; ओकरा सीधे आधुनिक जीन-अध्ययनक सफल वैज्ञानिक परिणाम कहबाक पर्याप्त प्रयोगात्मक साक्ष्य एहि पुस्तकक सैद्धान्तिक वर्णनमे प्रस्तुत नहि होइत अछि। विवाहनियमक ऐतिहासिक अभिप्राय आ जैविक परिणामक आधुनिक परीक्षण अलग राखला पर कथन अधिक विश्वसनीय बनैत अछि।

आर्यभट, गङ्गेश उपाध्याय आ विद्यापतिक वंश-सन्दर्भ सामाजिक स्मृतिक अदभुत शोधद्वार खोलैत अछि। मुदा प्रसिद्ध नामक उल्लेख मात्रसँ सम्बन्धित पाँतिक सभ काल-निर्णय स्वतः प्रमाणित नहि होइत अछि। समकालीन अभिलेख, पाण्डुलिपि, वंशगणना आ नामसाम्यक वैकल्पिक सम्भावनासँ तुलना कएल जाएब आवश्यक अछि। एहि सम्भावनाकें स्पष्ट कहब अध्यायक अवमूल्यन नहि, बल्कि ओकर आलोचनात्मक विस्तार अछि।

प्रथम मूल ग्रन्थक अनुलग्नक : आँकड़ा-संचिकाक आलोचनात्मक परीक्षण
 संलग्न प्रथम मूल ग्रन्थक आँकड़ा-परिशिष्ट प्रथम मूल ग्रन्थक आँकड़ा-आधारित अनुलग्नक अछि। एकरामे ८२ कार्यपत्रक देखल गेल अछि। प्रारम्भिक सूचीपत्र, गोत्र-मूल-मूलग्रामक समेकित तालिका, प्रश्नोत्तर-संग्रह, दूषण पञ्जी, नगराम पञ्जी, वंशश्रेणी, विवाह-प्रविष्टि, ग्राम-सूची आ

लिप्यन्तरण-संबद्ध समूह एकहि संचिकामे समेटल अछि। एकर फैलाव शोधक लेल महत्त्वपूर्ण अछि; तथापि कार्यपत्रकक सङ्ख्या स्वयं स्वतन्त्र ऐतिहासिक प्रमाणक सङ्ख्या नहि अछि।

प्रश्नोत्तर कार्यपत्रक पृष्ठमे २२,६४५ पाँति आ मूल-गोत्र अभिलेखक कार्यपत्रकमे ११,७६५ पाँति सहित शीर्षक-सारिणी भेटैत अछि। प्रश्नोत्तरक पाँति सँ मूल पञ्जीक सत्यापित अभिलेखक पाँति स्वतः समान नहि ठहरैत अछि। शोधक समय हर दाबी लेल स्रोत-नाम, मूल पत्र, प्रविष्टि-सङ्ख्या, लिप्यन्तरणक अवस्था आ प्रमाण-स्तर अलग निर्धारित कएल जाएबाक चाही।

गोत्र-मूल-मूलग्रामक मुख्य कार्यपत्रक पृष्ठक शीर्षकपाँतिमे S_No, Gotra, Mula आदि स्तम्भ अछि; मुदा आरम्भिक आँकड़ामे Gotraक नीचाँ '1' आ अगिला स्तम्भमे 'Vatsa' भेटब सम्भावित स्तम्भ-विस्थापनक संकेत दैत अछि। ई एकटा सत्यापन-योग्य आँकड़ा-समस्या अछि, अन्तिम सुधारक आदेश नहि। मूल स्रोत आ आयात-विधान देखलाक बादे वास्तविक स्थाननिर्धारण होयत।

किछु कार्यपत्रकमे अन्तःस्रोतक शब्द, लिप्यन्तरण आ आधुनिक पुनर्विन्यास सह-अस्तित्वमे अछि। सम्पादकीय टिप्पणीक कार्यपत्रकमे मूल पाठकें 'IPA (as supplied in source; NOT converted)' लिखल गेल अछि; एहन अवस्थामे सर्वत्र मानकीकृत आइएएसटीक दावा करब उचित नहि। पञ्जी-अभिलेखक शोधयोग्यता लेल मूल अक्षररूप, पाठान्तर, सामान्यीकृत रूप आ व्याख्याक बीच पृथक् स्तम्भ रहब चाही।

अहि संलग्नकक आलोचनात्मक महत्त्व यथेष्ट अछि, मुदा एकर मात्र परिमाणक आधारपर 'सम्पूर्ण वंशावली'क दावा नहि कएल जा सकैत अछि। अन्तिम संस्करणमे दोहरायल प्रविष्टि, एकहि नामक भिन्न व्यक्ति, शीर्षक-पाँति, रिक्त स्थान, सम्भावित मिसअलाइनमेंट आ मूल-पत्रक

सङ्केतक अनुक्रमण आवश्यक रहत । ई अनुलग्नक केवल प्रथम मूल ग्रन्थक संग सम्बद्ध राखल गेल अछि ।

अध्याय ४ — वंशवर्गीकरण, विवाह-गणना आ आनुवंशिक उपमानक प्रमाण-सीमा

चारिम अध्याय 'Analytico-Genetic Report on the Mithila Panji Prabandh' सामाजिक इतिहासक चर्चा सँ आरम्भ कऽ गोत्र-प्रवर-मूलक वर्गीकरण आ विवाह-संगतता निर्धारित करबाक गणना धरि पहुँचैत अछि। पुस्तक बीस गोत्रक सूची प्रस्तुत करैत अछि; ओकर बाद वर-कन्याक पूर्वज-सम्बन्ध, 'षोडश छठी', उतेद, स्वजन आ निषिद्ध विवाहक प्रसंग जोड़ैत अछि। एकटा महत्त्वपूर्ण पाठकीय लाभ ई अछि जे वंशावलीक नाम-पाँतिकें परस्पर सम्बन्धक प्रश्नमे बदलिए शिक्षणयोग्य बनाओल गेल अछि। तथापि सूचीमे लिखल प्रत्येक मूलनामक वर्तनी, ओकर संख्या आ वर्गीकरणकें मूल पञ्जी-पृष्ठसँ मिलौने बिना अन्तिम तथ्य मानल नहि जा सकैत अछि।

अध्यायक 'वैवाहिक एल्गोरिद्म'क विचारक भीतर दू फराक साधन अछि : लिखित वंशसम्बन्धक नियम आ आधुनिक गणनात्मक विधि। पञ्जीकारक निर्णायक लेल जे पूर्वज-सम्बन्ध देखल जाइत छल, ओ अनिवार्य रूपसँ आनुवंशिक परीक्षण नहि छल। यदि 'सपिण्ड' दूरीक गणना कएल जाइत अछि, तँ ओकर दिशात्मक नियम, पिता आ माताक कतेक पीढ़ी गानल गेल, तथा एकहि पूर्वजधरि पहुँचबाक दू अलग मार्ग—सभ स्पष्ट देब आवश्यक अछि। सम्बन्धक गणना औपचारिक रूपसँ सही रहितो जँ प्रविष्टिक पहचान गलत जोड़ल गेल, तँ परिणाम गलत होयत; गणितीय सफाई स्रोतक त्रुटि स्वतः नहि सुधारैत अछि।

अध्यायमे हरिसिंहदेवकालीन संगठित पञ्जी-व्यवस्था, पञ्जीकारक प्रशिक्षण, सभा-गाछी आ परम्परागत अभिलेखक संरक्षणक कथा आवि रहल अछि। एहि कथनसभक आलोचनात्मक पठनमे पुरान घर-वंशस्मृति, राजकीय विनियमन आ एखन बाँचल पाण्डुलिपिक प्रत्यक्ष तिथि अलग राखब अनिवार्य अछि। ४५०-२००९ ईस्वीक दीर्घ शीर्षकीय अवधि हरेक

पाँतिक उतबे पुरान भौतिक प्रमाण नहि अछि। राजकीय उद्घाटन वा विवादक विशिष्ट वृत्तान्तकेँ मूल ग्रन्थक कथनक रूपमे चिन्हित कऽ, बाह्य अभिलेख बिनु निश्चित काल-निष्कर्ष देबाक सँ बचबाक चाही।

अध्यायक अन्तिम भाग पञ्जीक जैविक आनुवंशिकी आ रोग-निवारणसँ सम्भावित सम्बन्धक चर्चा करैत अछि। ई शोधक प्रश्न भऽ सकैत अछि; मुदा पञ्जीमे दर्ज गोत्र आ विवाह-परिहारक नियम सँ माइटोकॉन्ड्रियल वंश, गुणसूत्रीय समानता अथवा विशिष्ट रोग-सङ्क्रमण प्रत्यक्ष प्रमाणित नहि होइत अछि। एहन निष्कर्षक लेल नमूना-चयन, सहमति, प्रयोगशाला-परीक्षण आ जनसंख्या-विज्ञानक स्वतंत्र पद्धति चाही। एहि सीमाक पहचान अध्यायक महत्त्व घटबैत नहि, अपितु वंशाभिलेखकेँ समाजशास्त्र, इतिहास आ भावी जैविक शोध लेल अधिक विश्वसनीय बनबैत अछि।

अध्याय ५ — सामाजिक वंशरचना : श्रेणी, सत्ता आ स्त्रीक दर्ज उपस्थिति
 पाँचम अध्याय 'The Socio-Genetic Architecture of Mithila'
 पञ्जीकें केवल विवाहक पंजीकृत साधन नहि, मिथिलाक सामाजिक
 श्रेणीकरणक स्थापत्यक रूपमे पढ़ैत अछि। प्रारम्भमे राजसत्ता, पण्डित-
 प्रतिष्ठा आ वंश-रक्षणक सम्बन्ध प्रस्तुत अछि; आगाँ बीस गोत्र, प्रवर-
 विन्यास, मूल-शाखा आ विभिन्न मान-श्रेणीक नाम आवैत अछि। एहि
 संरचनामे पञ्जी सामाजिक स्मृतिक संग-संग सामर्थ्यक वितरणक अभिलेख
 सेहो बनि जाइत अछि। जे घर वा उपाधि मानक रूपमे दर्ज भेल, ओकर
 प्रतिष्ठाक पुनरुत्पादन संभव भेल; जे सम्बन्ध किनाराक सूचीमे चलि गेल,
 ओकर इतिहास अलग ढङ्गें लिखल गेल। ई मूल्यांकन स्रोतक सामाजिक
 तर्कक अध्ययन अछि, कोनो पुरान पदानुक्रमक समर्थन नहि।

अध्यायमे विवाह-निषेधक गणना आ कन्यापक 'सोलह छठी'क नामावली
 विशेष ध्यान माँगैत अछि। स्त्री प्रायः पितृवंशक अन्तःस्थ अधिकारिणी
 नहि, बल्कि विवाहयोग्य सम्बन्ध मापनक केन्द्रमे उपस्थित होइत छथि।
 एहि विरोधाभाससँ महिला-अभिलेखीय इतिहासक शोधप्रश्न उठैत अछि :
 स्त्रीक नाम कखन स्वतंत्र रूपमे देखाइत अछि, कखन ओ केवल पिता वा
 पतिक घरक संकेत बनि रहैत अछि, आ कखन मातृक सम्बन्ध एहन जाल
 देखबैत अछि जे पितृसूचीसँ बाहर रहि जाइत अछि? समीक्षाक अनुसार
 एहि दुविधाकें मात्र 'मातृवंशीय व्यवस्था' कहि देब अनुचित होयत;
 साक्ष्यक प्रकार स्पष्ट कएल जाए।

चारिम अध्यायसँ पाँचमक तुलनामे एकटा पुनरावृत्ति देखाइत अछि :
 हरिसिंहदेव-काल, वंश-सङ्कट, गोत्र-सूची आ पञ्जीकारक भूमिका फेर
 विस्तारसँ आबि रहल अछि। एकर लाभ विषयक बहु-दृष्टि व्याख्या भऽ
 सकैत अछि, मुदा शोध-पुस्तकमे प्रत्येक पुनरावर्तनक नव प्रमाण वा अलग
 प्रश्न देखायब चाही। 'आनुवंशिक समानता' आ 'प्रजनन-जोखिम घटल'

सन वैज्ञानिक सूचनाकें अध्याय शोध-निष्कर्षक निकट अनैत अछि, मुदा संलग्न स्रोत-सामग्रीमे जँ स्वतन्त्र नमूना-आधारित अध्ययन निर्दिष्ट नहि अछि तँ ओकरा निर्णायक प्रमाण नहि कहल जाए।

डिजिटलीकरण, लिप्यन्तरण आ विस्तृत पाण्डुलिपि-संग्रहक परिमाण सम्बन्धी सूचना संरक्षणक महत्त्वपूर्ण आह्वान अछि; तथापि 'कतेक पाण्डुलिपि', 'कतेक प्रविष्टि' आ 'कतेक पुनर्लिखित पाँति' तीन भिन्न गणनात्मक एकाइ अछि। प्रथम ग्रन्थक Excel अनुलग्नक एहि अन्तरकें प्रत्यक्ष देखबैत अछि : फ्लैशकार्ड आ मूल-वंशसङ्केतक तालिका समतुल्य अभिलेख नहि अछि। परिणामतः एतय संख्या-विवरण लेल मूल पृष्ठ, तालिकाक प्रकार, दोहराव हटेबाक नियम आ पाठ-उत्पत्ति लिखल रहब चाही। ई पद्धतिक सुधार अध्यायक असल समाजवैज्ञानिक उपलब्धिकें सुरक्षित रखत।

अध्याय ६ — अभिलेखीय न्याय, सामाजिक निषेध आ ऐतिहासिक वृत्तान्तक पुनःपरीक्षण

छठम अध्याय 'The Mithila Panji Prabandha: An

Anthropological, Legal, and Socio-Historical Analysis' वंश-पंजीक संस्थागत उदयकें विवाह-विवाद, पवित्रता-सम्बन्धी सामाजिक मान्यता आ राजकीय नियंत्रणक माध्यमसँ पढ़ैत अछि। हरिनाथ उपाध्याय, लक्ष्मीमा देवी आ हरिसिंहदेवसँ जुड़ल वृत्तान्त एहि अध्यायक कथात्मक केन्द्र अछि। एतय न्याय-पद्धतिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि : एकटा वंश-स्मृतिमे जखन 'घटना'क रूपमे कथा लिखल जाए, तँ ओ कथा, ओकर पश्चात्कालीन पुनर्कथन आ प्रत्यक्ष प्रामाणिक न्यायिक अभिलेखक बीच कतेक अन्तर अछि? ग्रन्थक कथनकें स्रोतपरम्पराक उद्घरण मानब उचित अछि; स्वतः सिद्ध घटनाक इतिहास मानब नहि।

अध्याय पञ्जी व्यवस्था आ जाति-नियमनक सम्बन्ध पर प्रकाश दैत अछि। विवाहक वैधानिकताक निर्णय वंशानुक्रमक जाँचक रूपमे समझल जा सकैत अछि; मुदा 'शुद्धता', 'अशुद्धता' अथवा 'जातिभ्रंश' सन शब्द अपन कालक सत्तात्मक श्रेणी छल। आजुक आलोचना एहि पदसभक सामाजिक प्रयोग, बहिष्कारक सम्भावना आ निर्दिष्ट व्यक्ति पर पड़ल प्रभावक परीक्षण करैत अछि; ओकरा नैतिक सत्यक रूपमे स्वीकार नहि करैत अछि। एहि ठाम ग्रन्थक कानूनी भाषा आ विद्यमान विधिक कानूनक बीच अन्तरो स्पष्ट करब जरूरी अछि।

लक्ष्मीमा देवीक बुद्धिपरक हस्तक्षेपक प्रसंग स्त्री-विद्वत्ताक स्मृतिक एक आकर्षक बिन्दु अछि। तथापि कथाक भीतर विदुषी नारीक निर्णय आ विवाहोचित 'शुचिताक' परीक्षा साथै उपस्थित रहिते सामाजिक विरोधाभास उघाड़ैत अछि। आलोचना पूछैत अछि जे महिला कखन निर्णायक कर्ता बनैत छथि, आ कखन हुनकर देह वा वैवाहिक स्थिति संस्था द्वारा परीक्षाक विषय बनि जाइत अछि। स्रोतक अलग-अलग संस्कारकथा

आ विधानकेँ आलोचनात्मक दूरीसँ पढ़ल जाए, तखन एहि अध्यायक नृवंशविज्ञानिक आयाम अधिक समर्थ होयत। पहिल तीन शोध-अध्यायक संग एकत्र राखि देखला पर छठम अध्याय पञ्जीक द्विविध भूमिका स्पष्ट करैत अछि : वंशस्मृति सुरक्षित करबाक साधन आ सामाजिक सम्बन्धक द्वारक पहरेंदार। एहि दुहरी भूमिकाकेँ व्यवस्थित रूपसँ देखायब ग्रन्थक प्रमुख उपलब्धि अछि। सम्पादकीय आवश्यकता ई अछि जे घटनाक स्रोत, लिखित नियम, परम्पराक मौखिक स्मरण, आधुनिक सामाजिक विवेचन आ जैविक उपमान अलग पहचान योग्य रह्य; नहि तँ सभ प्रमाण एकहि परिच्छेदमे विलय भऽ सकैत अछि।

अध्याय ७ — समग्र मार्गदर्शिका : पञ्जी-व्यवस्थाक परिचयसँ पुनर्निर्माण धरि

सातम अध्याय पञ्जीक राजकीय परम्परा, गोत्र-विभाजन, विवाह-सम्बन्ध आ अभिलेख-पठनकें एकटा शिक्षण-विन्यासमे आनैत अछि। एकरा पढबाक विशेषता एहिमे अछि जे पूर्व अध्यायसभमे विखरल परिभाषा एकठाम व्यवस्थित होइत अछि। मुदा परिचयात्मक व्यवस्थितता ऐतिहासिक सत्यापनक स्थान नहि लऽ सकैत अछि। अध्यायक प्रत्येक तिथि, सामाजिक वर्ग आ पञ्जीकार-प्रक्रियाकें मूल पत्र, वंशावली आ स्वतंत्र प्रमाणक आधारपर अलग-अलग जाँचब अपेक्षित अछि।

अभिलेखक संरक्षण आ पाठकीय सुलभता एहि अध्यायक उपयोगी लक्ष्य अछि। तथापि 'जीनोम मानचित्रण' कहि वंश-सूची प्रस्तुत कएलासँ डीएनएक नमूनाक वैज्ञानिक परिणाम प्राप्त नहि होइत अछि। एहि सीमा पर स्पष्ट टिप्पणीक अभावमे शिक्षार्थी समाजविज्ञानक वंशजालकें जैविक समानताक प्रत्यक्ष प्रमाण बुझि सकैत छथि।

"Migration and "Dosha": The Panji records "Doshas" (faults or deviations in lineage), such as marriages into unknown castes or prohibited families, ensuring that the social standing of a lineage is transparent." [मूल ग्रन्थ, अध्याय 7]

"Multilayered Documentation: The digital system must differentiate between Moola Panji (original roots), Sakha Panji (branch records), and Dushana Panji (records of lineage flaws or contamination used for risk management)." [मूल ग्रन्थ, अध्याय 7]

अध्याय ८ — स्त्री, दूषण आ सामाजिक प्रतिष्ठाक राजनैतिक अर्थ
आठम अध्याय प्रश्नोत्तर पद्धतिसँ महिला-अभिलेखीय उपस्थिति, दूषण-श्रेणी आ सामाजिक मानक पुनर्गठनपर चर्चा करैत अछि। प्रश्नोत्तरक सुविधा ई अछि जे संस्थाक इतिहास आ वर्गीकृत अभिलेखक व्यावहारिक असर एहि दृश्य-पटल पर अबैत अछि। एकर सीमा ई अछि जे उत्तरक निर्णायक स्वर ओहि स्रोतक अनिश्चितताकें ढाकि सकैत अछि, जे परवर्ती निबन्धमे आलोचनात्मक विवेचनक विषय बनबाक चाही।

महिलाक नाम कखन स्वतंत्र उपस्थिति, कखन मात्र विवाहक मार्ग, आ कखन निषेधक अभिलेखीय सङ्केत अछि—एहि तीन प्रश्नकें एकसमान नहि मानब चाही। दूषण अथवा प्रतिष्ठाक पुरान नामकरण इतिहासक अध्ययनक सामग्री अछि; वर्तमान व्यक्तिक नैतिक मूल्याङ्कन नहि। एहि दृष्टिसँ ई अध्याय सामाजिक सत्ता आ वंशस्मृतिक बीच सजीव तनातनी खोलैत अछि।

“The Mul is the most critical component for maintaining genealogical records (Panji).” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 8]

“In the Panji Prabandha system, Sam-Gotra(same Gotra) marriages are strictly forbidden because a Gotra functions as a direct indicator of patriarchal lineage (Vamsha-bodhak).” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 8]

अध्याय ९ — प्राचीन पञ्जीक प्रथम पृष्ठसमूह : ग्राम आ मूलक अन्तर
नवम अध्याय प्राचीन पञ्जीक पहिल पृष्ठसमूहकें ग्राम, कुल, गोत्र आ
मूलक आधारपर पढ़ैत अछि। वस्तुतः पञ्जीक एकटा ग्रामशीर्षक ओही ठाम
उपस्थित प्रत्येक व्यक्तिक जन्मस्थानक प्रमाण नहि। ग्राम आ वंशद्वयक
मिलान करबाक काल लेखकक ग्रामसूची आ मूल अभिलेखीय पाँतिक अन्तर
देखनाइ आवश्यक अछि। एहि भेदकें सुरक्षित राखि संलग्न स्थाननामक
भविष्यमे भौगोलिक मिलान सम्भव होयत।

अध्यायक विद्वत्-उपाधि आ वंश-सन्ततिक प्रसंग देखबैत अछि जे पञ्जी
एकरेखीय परिवार-वृक्ष नहि, सामाजिक सम्बन्धक बहुस्तरीय पंजी अछि।
एहि बहुस्तरकें सारिणीमे बदलैत समय 'उल्लिखित सम्बन्ध', 'अनुमानित
सम्बन्ध' आ 'अप्रमाणित निरन्तरता' लेल अलग चिह्न राखब चाही।

“The text opens with the invocatory formula 'Atha patra pañji likhyate' (atha
patra pañji likhate / atha sapatra pañji likhate) — 'Now the genealogical
register is written' — establishing its ritual-juridical function as an
authoritative record, not merely a genealogical chronicle.” [मूल ग्रन्थ,
अध्याय 9]

“Analytical note: The gotra list in section 14 is unusual in including a verse for
the Kādya (Kāśyapa) gotra: 'dānaśauryaṃ pratāpaiśca prasiddhā yatra
pārthivāḥ — Oinīsā sarvataḥ śreṣṭhā svosva-dharma-pravartikāḥ' — 'Those
rulers who are renowned for liberality, valour and majesty; the Oinīsā are the
best in...'” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 9]

अध्याय १० — प्रथम खण्डक विस्तारित पृष्ठ : विवाह-उपसंहारक साक्ष्य
दसम अध्याय पृष्ठ ६६-३४७क विस्तृत सामग्री आ विवाह-सम्बन्धी
समाप्ति-सूत्र पढ़ैत अछि। एहि पृष्ठक्षेत्रक वंशरेखाकेँ नवम अध्यायक
प्रारम्भिक ग्रामसमूहसँ जोड़ैत काल दोहरायल नाम पर विशेष सावधानी
चाही। एकहि नामक लोक अलग ग्राम आ पीढ़ीमे उपस्थित रहि सकैत
छथि। अतः अध्यायसँ निस्सृत सम्बन्धक सूचीपर संदर्भ-पृष्ठ आ पदच्छेदक
संकेत आवश्यक अछि।

विवाह-उपसंहार सामाजिक मान्यता, विवाहक घटना आ वंशक स्थलान्तरक
एकहि प्रकारक सूचना नहि दैत अछि। लिखित सूत्रमे कतेक स्पष्ट अछि
आ आलोचक कतेक विस्तार करैत छथि—ई अन्तर देखायब एहि अध्यायक
मुख्य विधिशास्त्रीय कसौटी होयत।

“gaṃgorā / Gaṅgorā | Gangora, near Budhwal | Medium (7+) | Budhavāla-
Gaṅgorā pairing; Śāṇḍilya gotra branch” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 10]

“Page 1., section §127, preserves a remarkable title-cluster that signals the
encounter between the Pañji's Brahmin genealogical system and the Mughal
administrative apparatus: 'Mahādāra Devānanda suta Cāturmāsika-
Mansabdār-Hazārī Rāmānanda Caudharī Māniknandana' — 'Generous
Devānanda's son: the Four-Month Commander-of-a-Thousand Rāmānanda
Caudhary Māniknandana.' The 'Mansabdār Hazārī' (commander of 1000...”
[मूल ग्रन्थ, अध्याय 10]

अध्याय ११ — राजकीय साक्ष्य, पाण्डित्यक पदवी आ आधुनिक समय
 एगारहम अध्याय प्राचीन पञ्जीक परवर्ती पृष्ठ ३४८-६९०मे राजकीय
 स्मृति, विद्वत्-पदवी आ आधुनिक सम्बन्धक चर्चा करैत अछि। पञ्जीक
 भीतर उल्लेखित राज-पुरुषक नामक उपस्थिति राजकीय अभिलेखक बाह्य
 पुष्टि नहि। पदवीक पारिवारिक उपयोग, तत्कालीन सामाजिक प्रतिष्ठा आ
 ठोस पदस्थापनक ऐतिहासिक प्रमाण तीन अलग बात अछि। एहि सीमाक
 स्पष्टता सँ पञ्जी सामाजिक इतिहासक अधिक विश्वसनीय आधार बनैत
 अछि।

पुरान पाँतिसभ आ आधुनिक जीवन-वृत्तान्त एकहि खण्डमे मिलला पर
 पाठ-संपादनक स्तर बदलि जाइत अछि। के अभिलेखीय मूलक भाग अछि,
 के बादक संकलन, के वर्तमान व्याख्या—एहि सभकँ अलग परिच्छेद वा
 स्रोतचिह्नमे राखल जाए।

“The 160 pages contain 41 vivāha (marriage) records — significantly more per
 page than previous volumes — and 91 Mahārāja-titled entries, reflecting a
 royal lineage that reaches extraordinary complexity in the Mādhavasīṃha,
 Chhatrasīṃha, Rāmeśvarasīṃha, and Kāmeśvarasīṃha dynastic branches.”

[मूल ग्रन्थ, अध्याय 11]

“Page 286, within the Bābu Khaḍagapati Siṃha chain, preserves in parenthesis:
 '(Bābu Khaḍagapati Siṃha sutā Svīḍana deśe antadhārmika vivāha:)' — 'The
 daughters/sons of Bābu Khaḍagapati Siṃha [performed] an inter-faith
 marriage in the country of Sweden.' The term 'antadhārmika' (between-
 religions) is a euphemism for inter-religious marriage.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय
 11]

अध्याय १२ — उटीपक सहायक टिप्पणी : जीवित सम्बन्धजालक पुनर्पाठ
बारहम अध्याय उटीप-सम्बन्धी सामग्रीकेँ पञ्जीक परस्पर संदर्भित
अर्थबोधक रूपमे देखैत अछि। ‘जीवित जीनोम’क उपमान प्रभावशाली
अछि, मुदा एकर पाठविद्यागत महत्त्व ओहिठाम अछि जतय पितृक
सम्बन्ध, मातृक कडी, ग्राम आ विवाहक संकेत एकाधिक पाठखंड जोड़ैत
अछि। उटीपक कोनो सूत्रकेँ मूल पञ्जीक विकल्प बना देब स्रोतक क्रम नष्ट
कऽ सकैत अछि।

उटीप-प्रविष्टिक सम्भावित विस्तारक समय मूल पाठ, अर्थ-विकल्प आ
पाठक द्वारा गढ़ल सम्बन्धचित्र अलग राखल जाए। जँ कनेको कडी केवल
सम्भावित अछि, तँ निष्कर्षमे ओकरा निश्चित रूपसँ नहि लिखल जाए।

“Format:[Father's name] suto/suta [Son(s)/Daughter(s)] [Village/Location]
saṃ [Mother's lineage source — donor's name] dau [Village of maternal
grandfather] ddau” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 12]

“Mahāmahopādhyāya Dr. Sir Gaṅgānātha Jhā (m.m. ḍā. sara gaṅgānātha):Vice
Chancellor of Allahabad University; Professor at Oxford University, England.
One of the greatest Sanskrit scholars of the 20th century. His works on Indian
philosophy (Nyāya, Mīmāṃsā, Prābhākara) are foundational. The Uṭīp records
his gotra, paternal lineage (from...)” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 12]

अध्याय १३ — Genome Mapping Volume I: Analytical Report on Mithilak Pañjee Prabandha

अध्याय १३मे पञ्जीकारक पारिभाषिक पद ‘दाउ’ आ ग्रामसम्बन्धक आलेख संगठित कएल गेल अछि। एकर शक्ति ई जे विवाहक सम्बन्धकें घरक बाहर फैलल सामाजिक जालक रूपमे देखा सकैत अछि। मुदा ‘प्रत्येक प्रविष्टि’मे पूर्वजक ग्राम आ तत्कालीन निवास दुनू दर्ज अछि—एहन व्यापक कथन मूल प्रविष्टि-गणना बिना स्वीकार्य नहि। ‘ग्रामारम्भ’ नूतन पाठखण्डक सङ्केत सेहो भऽ सकैत अछि; एकरासँ प्रत्येक बेर वास्तविक प्रवासक तिथि नहि निकलैत अछि।

ग्रन्थक दीर्घ समय-सीमा वंशस्मृतिक विस्तार बतबैत अछि; प्रत्येक पाँतिक भौतिक लेखन-तिथि ताहिसँ प्रमाणित नहि होइत अछि। मौखिक परम्परा, संकलन, नकल आ आधुनिक व्याख्या फराक समयगत स्तर अछि।

राजकीय आरम्भक कथा, सामाजिक व्यवस्था आ अनुमानित कालक्रम एकहि अर्थक ‘समकालीन इतिहास’ नहि अछि। उपलब्ध पाठमे जे लिखल अछि ओकर विशिष्ट प्रमाणस्थिति बताइत बाह्य स्रोतक प्रश्न खुलल राखल जाए।

“*Dau / Dou: The father-in-law's side (the bridegroom's father / the person through whom the wife is given).*” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 13]

“The Panjee entries track geographical mobility. Every entry records both the ancestral village (from which a family originates) and the current village (where the alliance is contracted). Phrases like ‘Gram Aarambha’ (beginning of the village's record) mark new village entries, indicating when a family relocated and...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 13]

एहि अध्यायमे ‘डाउ’ आ विवाहसम्बन्धक व्याख्याक संग ग्रामसँ ग्रामक सम्पर्ककें व्यवस्थित सामाजिक मानचित्र जकाँ देखाओल गेल अछि। मुदा “प्रत्येक प्रविष्टि”मे मूलग्राम आ वर्तमान ग्राम दुनू अनिवार्य रूपसँ लिखल अछि—एहन सार्वत्रिक कथन जांचनीय अछि। अनुकरणीय पद्धति ओ

होयत जतय दर्ज ग्राम, संकलकक व्याख्या आ संभावित प्रवास तीन अलग कोठामे राखल जाए।

प्रथम मूल पुस्तक स्वयं शोध-प्रतिवेदनसभक सङ्कलन अछि; अतः एहिमे उद्धृत पञ्जी-प्रविष्टि आ लेखकक व्याख्या बीच मध्यवर्ती पाठ-स्तर अछि। एहि अध्यायक आलोचनामे स्रोतगत दावाक स्वतन्त्र मूल पञ्जी-पाण्डुलिपिसँ सत्यापन एखन भेल अछि—एहन दावा नहि कएल जाए।

अध्याय १४ — Pampilā Pañjī, Khaṇḍa 3 — Nāgarāma:

Comprehensive Analytical Report (Volume I)

नगराम सम्बन्धी एहि प्रतिवेदनमे मुख्य ग्राम आ वैवाहिक सम्पर्कक ग्राम अलग देखेबाक कोशिश अछि। ई भेद आधारभूत अछि, कारण एकहि स्थान केन्द्रीय मूल होइतो परवर्ती शाखाक विवाहक्षेत्र भऽ सकैत अछि। लेखकक ग्रामनाम-मानकीकरण एकटा शोध-सुविधा अछि, मूल वर्तनीक विकल्प नहि। नगरामक परिचय एहि बादक तेसर खण्डक प्रत्यक्ष प्रविष्टिविश्लेषणसँ तुलना कएल जाय तँ केवल मिलैत नाम नहि, ओहि नामक संग उपस्थित पितृनाम आ शाखासूचक पद सेहो मिलबाक चाही। एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कड़ीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

“The reading direction is: Personal name → titles/aliases → village of bride's family → her father's name → her father's father's name → marker 'dau' → maternal cross-link village → maternal grandfather's name → 'ddau'.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 14]

“Candrānanda's son Sañjaya (Sanjay) represents the generation of the 1960s–70s.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 14]

व्यक्तिनाम, उपाधि, विवाह-स्थान, ससुरक नाम आ मातृक ग्रामक क्रम बताओल गेल अछि। ई पाठ-विवेचनक उपयोगी आधार अछि। मुदा ककरो सन्तानकें विशिष्ट आधुनिक दशकक प्रतिनिधि कहल गेल अछि तँ ओकर स्रोतसमर्थित काल-साक्ष्य अलग देखाओल जाए; वर्तमानकालक ऐतिहासिक अनुमानक आधार मात्र पीढ़ीक गणना नहि हो।

प्रथम मूल पुस्तक स्वयं शोध-प्रतिवेदनसभक सङ्कलन अछि; अतः एहिमे उद्धृत पञ्जी-प्रविष्टि आ लेखकक व्याख्या बीच मध्यवर्ती पाठ-स्तर अछि। एहि अध्यायक आलोचनामे स्रोतगत दावाक स्वतन्त्र मूल पञ्जी-पाण्डुलिपिसँ सत्यापन एखन भेल अछि—एहन दावा नहि कएल जाए।

अध्याय १५ — Pampilā-Varga Pañjikā, Khaṇḍa 3 (Nagaramī): Entries 226-358 (Volume I)

प्रविष्टि २२६-३५८क समूहपर केन्द्रित अध्याय खण्डवार क्रमक उपयोगी सीमा तय करैत अछि। मुदा प्रविष्टिक चयनित उदाहरण आ सम्पूर्ण १३३-क्रमक समग्र पाठ एक नहि। आलोचनामे एकर परिणाम स्पष्ट अछि: जे वंशसूत्र उदाहरणमे उल्लेखित नहि, तकर अनुपस्थिति स्रोतमे नहि होएबाक प्रमाण नहि। प्रत्येक निर्णय संग मूल प्रविष्टि-सङ्ख्या, सम्बन्धसूचक पद आ ग्रामशीर्षक जोड़ल जाए तँ एहि प्रतिवेदनक पुनःपरीक्षण सम्भव होयत। संयुक्त ग्राम-रेखाकें विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना 'वहाँ गेल' आ 'वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित' दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“[Name] suta / suto / suta: [son(s)] [village-A] sam [maternal-side-ancestor] sut [maternal lineage member] dau ... [village-B] sam [paternal-lineage-side] ddau” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 15]

“'Thothri'branch — Kanhai pr. Vishnu-Mani: An 'apara Hariharadatt suto Thothrik' entry introduces a second-wife branch. Kanhai pr. Vishnumani tells us the child was named Kanhai (a name for Krishna, from the Sanskrit Kanha) but was formally known as Vishnumani. Two Vaishnava names for the same person...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 15]

एहि अध्यायमे एकटा सीमित प्रविष्टिसमूहकें अध्ययनक इकाइ बनाओल गेल अछि, जाहिसँ व्यापक नगराम-वृत्तान्तक अन्दर विशिष्ट शाखाक सत्यापन सम्भव होइत अछि। उपर्युक्त संख्याक आवरणक जाँच अध्यायमे

उद्धृत वास्तविक प्रविष्टिक संग करबाक अछि। ग्रामनामक घनत्वकें स्वयंसिद्ध जनसंख्या-घनत्व अथवा प्रवासक आवृत्ति नहि मानल जाए।

प्रथम मूल पुस्तक स्वयं शोध-प्रतिवेदनसभक सङ्कलन अछि; अतः एहिमे उद्धृत पञ्जी-प्रविष्टि आ लेखकक व्याख्या बीच मध्यवर्ती पाठ-स्तर अछि। एहि अध्यायक आलोचनामे स्रोतगत दावाक स्वतन्त्र मूल पञ्जी-पाण्डुलिपिसँ सत्यापन एखन भेल अछि—एहन दावा नहि कएल जाए।

अध्याय १६ — Pañjī Prabandha, Khaṇḍa 3 (Nagramā): Blocks 359-466 (Volume I)

नगरामक ३५९-४६६ प्रविष्टि पूर्ववर्ती २२६-३५८ समूहसँ अलग भेला परो एकहि अभिलेखीय संसारक उत्तरकडी अछि। एहि अध्यायमे आवाहन, ग्रामारम्भ आ सम्बन्धसूत्र अलग संरचनात्मक खण्ड मानल गेल अछि। आवाहनकें व्यक्ति-वंशक नाम, 'ग्रामारम्भ'कें पक्का प्रवास आ 'सुत'कें सदा एके अर्थमे रखबासँ त्रुटि उपजैत अछि। अनुक्रमिक संधिस्थलक प्रत्यक्ष परीक्षणमे अन्तिम प्रविष्टि ३५८ आ पहिल ३५९क बीच मूल पाठक निरन्तरता वा विभाजन अलग जाँचल जाए।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

एहि शाखाक नाम-धनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

“The core entry formula is: [Person A] suta/sutā/suto [Person B] :: [village name] sa~ [grandfather's name] suta [father's name] dau [mother's village] sa~ [maternal grandfather] ddau.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 16]

“M.M. Madhusūdana's sons include M.M. Gośāṁī Madana and Baladeva. Gośāṁī Madana's son Gaṅgādatta, and his son Śivadatta, extend the scholarly line. The Baladeva branch produces Gośāṁī Jīvanātha, Sonāī (alias Rāmanātha), and Hariātha — the latter a name connecting the family to the Vaiṣṇava tradition.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 16]

प्रविष्टिक अगिला समूहमे निरन्तर क्रमबद्धता महत्त्वपूर्ण अछि। मूल पञ्जीक दुरुह नामक्रम, भङ्ग सामग्री, दिगन्तर-सम्बन्ध आ आधुनिक जोड़कें अलग पहिचान देबाक आवश्यकता अछि। एकहि परिच्छेदक अन्दर

अनेक शाखा उपस्थित रहला पर समीक्षाक कसौटी केवल पाठक सहजता नहि, मूल अनुक्रमक पुनर्प्राप्तियोग्यता सेहो अछि।

प्रथम मूल पुस्तक स्वयं शोध-प्रतिवेदनसभक सङ्कलन अछि; अतः एहिमे उद्धृत पञ्जी-प्रविष्टि आ लेखकक व्याख्या बीच मध्यवर्ती पाठ-स्तर अछि। एहि अध्यायक आलोचनामे स्रोतगत दावाक स्वतन्त्र मूल पञ्जी-पाण्डुलिपिसँ सत्यापन एखन भेल अछि—एहन दावा नहि कएल जाए।

अध्याय १७ — Panji Prabandha of Mithila: Genealogical Mapping (450 AD – 2009 AD), Comprehensive Research Report

वंशावली मानचित्रणक प्रतिवेदनमे ४५०-२००९ ई.क विस्तृत कालसीमा शीर्षकमे उपस्थित अछि। एतय एकटा मूलभूत इतिहासलेखनक प्रश्न अछि: प्राचीन पूर्वजक कथित काल, उपलब्ध पाण्डुलिपिक लेखनकाल, पुनर्लेखनक अवधि आ आजुक व्याख्याक तिथि अलग-अलग प्रमाण माँगैत अछि। बल्लाल सेनक परम्परागत सम्बन्ध हो वा राजकीय आश्रयक वर्णन, प्रत्येक दावाकें तत्कालीन दस्तावेजसँ अलग देखेबाक चाही। एकटा दीर्घ सामाजिक स्मृतिलोककें निरन्तर समकालीन अभिलेखक बराबर मानि लेब इतिहासक कठिनाईकें ढाँकि देत।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कड़ीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

“The Panji maintains three simultaneous exogamic prohibitions that go beyond the standard sapinda rules of Dharmaśāstra: (1) gotra exogamy — no marriage within the same patrilineal clan (gotras such as Kāśyapa, Śaṇḍilya, Vatsa, Bhāradvāja appear throughout the corpus); (2) pravara exogamy — no marriage among those...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 17]

“A critical sociological reading of the Panji corpus cannot avoid its fundamental androcentric structure.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 17]

वंशपरम्पराक दीर्घ विस्तार समाजक स्मृति खोलैत अछि; ताहिसँ सभ कालखण्डक जीवित लिखित अभिलेख प्रमाणित नहि होइत अछि। एहि अध्यायमे भिन्न वर्गक इतिहास—वंशावली, विवाहयोग्यता, राजकीय

संरक्षण, भाषा आ प्रशासन—एकठाम अबैत अछि। एकर आलोचना विषयक विस्तारक प्रशंसा करैत प्रत्येक ऐतिहासिक दावाक अलग स्रोताधार चाहैत अछि।

प्रथम मूल पुस्तक स्वयं शोध-प्रतिवेदनसभक सङ्कलन अछि; अतः एहिमे उद्धृत पञ्जी-प्रविष्टि आ लेखकक व्याख्या बीच मध्यवर्ती पाठ-स्तर अछि।

एहि अध्यायक आलोचनामे स्रोतगत दावाक स्वतन्त्र मूल पञ्जी-पाण्डुलिपिसँ सत्यापन एखन भेल अछि—एहन दावा नहि कएल जाए।

अध्याय १८ — The Dooshan Pañjī of Mithila: A

Comprehensive Scholarly Report

दूषण पञ्जीक पहिल व्यापक प्रतिवेदन सात प्रकारक पञ्जीक कार्यभेदसँ आरम्भ होइत अछि। श्रेणीक ऐतिहासिक नाम अर्थपूर्ण अछि, मुदा ‘दोष’ वा ‘अशुद्धि’ सन पुराने शब्द वर्तमान मनुष्यक मूल्याङ्कन नहि बनि सकैत। एहि अध्यायमे शाखा-पञ्जीक कालसम्बन्धी दू अलग अनुमान एकहि पाठांशमे भेटैत अछि; एतय निर्णायक तिथि चुनि लेबाक बदला भिन्न स्रोतदावाक सूची बनब विद्वत् पद्धति होयत। वर्गीकरणक अस्तित्व आ वर्गीकृत व्यक्तिक वास्तविक जीवन—ई दू प्रमाणवर्ग फराक अछि। एहि पृष्ठभूमिमे अभिलेखक केवल ‘अपराधक सूची’ कहब सामाजिक इतिहासक प्रमाण मिटाएब होयत। शोधक केन्द्र लिखित श्रेणीकरण, ओकर सामाजिक शक्ति आ प्रभावित मानव-जीवनक अभिलेखीय अदृश्यता रहबाक चाही।

‘दूषण’क सूची ऐतिहासिक अभिलेखमे निर्मित सामाजिक वर्ग अछि, वैज्ञानिक अथवा वर्तमान नैतिक निर्णय नहि। शब्दक वर्णन आ ओकर अपमानसूचक प्रभावक आलोचना दुनू एक संग करब आवश्यक अछि।

“3. Gotra Pañjī (Lineage-Clan Record)—Records the gotra (Vedic exogamous clan designation, named after ancient Rishis) and traces its ancient primordial origin. This serves the exogamy regulation function: no two persons of the same gotra may marry.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 18]

“2. Pashchim Desha āgata (Arrivals from the West — unidentified lineage): Tables 22–23 (212/1, 212/2): These are genealogically enigmatic entries: persons who came from Pashchim Desha (western regions — possibly referring to Awadh, Rajputana, or even further west) with ajñāta kula-śīla — unknown or unverifiable lineage and...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 18]

दूषण पञ्जीपर पहिल दीर्घ अध्ययन मानवीय जटिलताकें वर्गीकृत अभिलेखसँ जोड़ैत अछि। अभिलेखक श्रेणी सामाजिक सत्ता द्वारा निर्मित अछि, ओहि व्यक्तिक ‘दोष’क आधुनिक प्रमाण नहि। मूल पदक अर्थ,

सामाजिक विधि आ उत्तरवर्ती व्याख्याक दूरी रखबासँ एहि पाठक
नृवंशवैज्ञानिक मूल्य सुरक्षित रहत ।

प्रथम मूल पुस्तक स्वयं शोध-प्रतिवेदनसभक सङ्कलन अछि; अतः एहिमे
उद्धृत पञ्जी-प्रविष्टि आ लेखकक व्याख्या बीच मध्यवर्ती पाठ-स्तर अछि ।
एहि अध्यायक आलोचनामे स्रोतगत दावाक स्वतन्त्र मूल पञ्जी-
पाण्डुलिपिसँ सत्यापन एखन भेल अछि—एहन दावा नहि कएल जाए ।

अध्याय १९ — Dūṣaṇa Pañjī — The Black Book: A Complete Study from Genealogical Theories

दूषण पञ्जीक वंशवैज्ञानिक अध्ययन 'मूल', 'शाखा', 'गोत्र', 'पत्र' आ 'उत्तेद्र'क परस्पर सम्बन्ध बनबैत अछि। एतय गणना विवाह-निषेधक सामाजिक पद्धति बुझएबाक साधन अछि, आधुनिक जैविक रोग-अनुमानक प्रमाण नहि। मातृपक्षकै वंशक केवल परिशिष्ट मानल जाय तँ विवाह-सूत्रक निर्णायक हिस्सा हेराएत। एहि अध्यायक मूल्य पुराने पदक अर्थ बदलने बिना तकर सामाजिक शक्ति, दर्ज अपवाद आ चुप्पी तीनूकै साथ पढ़बामे अछि।

'दूषण'क सूची ऐतिहासिक अभिलेखमे निर्मित सामाजिक वर्ग अछि, वैज्ञानिक अथवा वर्तमान नैतिक निर्णय नहि। शब्दक वर्णन आ ओकर अपमानसूचक प्रभावक आलोचना दुनू एक संग करब आवश्यक अछि। प्रविष्टिमे जतेक वंश-सम्बन्ध स्पष्ट अछि ततबे दर्ज कएल जाए। 'अज्ञात' अथवा वर्गभेदसँ नामित कोनो व्यक्तिक कृत्य, चरित्र वा जातीय स्थिति अतिरिक्त प्रमाण बिना निर्धारित नहि करबाक चाही।

"This register maps the 20 gotra (patrilineal descent groups) and 167 mūlas (sub-clans) of Maithil Brahmin society." [मूल ग्रन्थ, अध्याय 19]

"Rule 4 (Vimatā): The bride must not be the daughter of the groom's stepmother's brother." [मूल ग्रन्थ, अध्याय 19]

अध्याय अपन विषयक व्यापकता पर बल दैत अछि। मुदा 'पूर्ण' अध्ययनक दावा विस्तृत सामग्रीक पर्याय नहि। सहायक दस्तावेज, प्रविष्टिक वास्तविक कुल संख्या, छूटल स्त्रीरेखा, मूल/गोत्र सूची आ प्राथमिक अभिलेखसँ तुलना कएल गेल अछि वा नहि—एहि प्रश्नसभक लेखा जरूरी अछि। वर्गीकरणक इतिहासकै आलोचना बिना दोहराएब उचित नहि। प्रथम मूल पुस्तक स्वयं शोध-प्रतिवेदनसभक सङ्कलन अछि; अतः एहिमे उद्धृत पञ्जी-प्रविष्टि आ लेखकक व्याख्या बीच मध्यवर्ती पाठ-स्तर अछि।

एहि अध्यायक आलोचनामे स्रोतगत दावाक स्वतन्त्र मूल पञ्जी-
पाण्डुलिपिसँ सत्यापन एखन भेल अछि—एहन दावा नहि कएल जाए।

अध्याय २० — Dooshan Panji: An Interdisciplinary Research Report through Anthropological, Sociological, and Genealogical Lenses

अन्तिम अन्तर्विषयी प्रतिवेदनमे मानवशास्त्र, समाजशास्त्र आ वंशावलीक भाषा एक संग अबैत अछि। एहि संयोजनमे लाभ अछि, कारण पञ्जीक वर्गीकरण एकहि अनुशासनसँ पूर्ण रूपेँ नहि बुझल जा सकैत। जोखिम ई अछि जे समाजक वर्ग-निर्धारण, वैवाहिक नियम, व्यावहारिक जीवन आ जैविक वंश समानार्थी होइ जाए। प्रतिवेदनक यथार्थ परीक्षा एक-एक दावाक ठीक पाठमूल आ सीमित निष्कर्ष देबामे अछि; स्रोतक नकारात्मक सामाजिक श्रेणी एकटा आधुनिक नैतिक निर्णय नहि।

प्रविष्टिमे जतेक वंश-सम्बन्ध स्पष्ट अछि ततबे दर्ज कएल जाए। 'अज्ञात' अथवा वर्गभेदसँ नामित कोनो व्यक्तिक कृत्य, चरित्र वा जातीय स्थिति अतिरिक्त प्रमाण बिना निर्धारित नहि करबाक चाही।

एहि पृष्ठभूमिमे अभिलेखकेँ केवल 'अपराधक सूची' कहब सामाजिक इतिहासक प्रमाण मिटाएब होयत। शोधक केन्द्र लिखित श्रेणीकरण, ओकर सामाजिक शक्ति आ प्रभावित मानव-जीवनक अभिलेखीय अदृश्यता रहबाक चाही।

“The Dooshan Panji — literally the 'Defect Register' or 'Black Book' — is one of the most remarkable archival documents in the history of Indian genealogical traditions.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 20]

“The Dooshan Panji reveals a gendered sociology of genealogical recording.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 20]

एहि समापन अध्यायमे अनुशासनसभक संगम देखाओल गेल अछि। वंशसूचीसँ सामाजिक मानक बुझल जा सकैत अछि, मुदा सामाजिक मानकसँ सीधे व्यक्तिक व्यवहार अथवा जैविक वंश निर्धारण नहि होइत अछि। विश्लेषणक मूल शक्ति प्रमाणक बहुस्तर अलग रखैत संयुक्त सामाजिक इतिहास बनबामे अछि।

प्रथम मूल पुस्तक स्वयं शोध-प्रतिवेदनसभक सङ्कलन अछि; अतः एहिमे उद्धृत पञ्जी-प्रविष्टि आ लेखकक व्याख्या बीच मध्यवर्ती पाठ-स्तर अछि। एहि अध्यायक आलोचनामे स्रोतगत दावाक स्वतन्त्र मूल पञ्जी-पाण्डुलिपिसँ सत्यापन एखन भेल अछि—एहन दावा नहि कएल जाए।

समग्र मूल्याङ्कन

पञ्जीक इतिहास आ वैज्ञानिक आनुवंशिकीकें एक-दोसरक रूपक मानलासँ शोधक सम्भावना स्पष्ट होइत अछि, मुदा एकरा प्रत्यक्ष जीन-परीक्षणक तथ्य मानलासँ विधिगत त्रुटि उपजैत अछि। पञ्जीकें सामाजिक स्मृति, नियमबद्ध विवाह-अनुमति आ वंशावली लेखनक प्रमाण मानल जाए; आनुवंशिक नातेदारीक जीववैज्ञानिक अनुमान लेल स्वतंत्र जनसंख्या-अध्ययन, नमूना-संग्रह आ विधिवत् अनुमोदन चाही।

प्रथम मूल पुस्तक बीस स्वतंत्र शोध-प्रतिवेदनक सङ्कलन अछि, प्राचीन पञ्जीक प्रत्यक्ष प्रतिलिपि नहि। एहि कारण उद्धरणक तीन स्तर बनेबाक अछि: मूल पञ्जीक नाम/सूत्र, अंग्रेजी प्रतिवेदनक साक्ष्य प्रस्तुति आ आलोचकक विवेचन। दीर्घ कालावधि, कथित राजकीय आरम्भ आ उपाधिसूचीकें समान प्रकारक ऐतिहासिक साक्ष्य नहि मानब।

प्रथम मूल पुस्तकक संग रहल आँकड़ा-कार्यपुस्तिका स्वतंत्र शोधसाधन अछि। ओकर ८२ कार्यपत्रकक उपस्थिति स्वयं एतय दर्ज कुल प्रविष्टिक अभिलेखीय विश्वसनीयता प्रमाणित नहि करैत। आँकड़ाक प्रत्येक पाँति लेल पञ्जी-मूलस्रोत, पृष्ठ/प्रविष्टि-सङ्केत, रूपान्तर-नियम, व्यक्ति-पहिचान आ नामान्तरक भरोसा पृथक् चाही।

स्रोत-विवेकक मर्यादा

समीक्षा मूल ग्रन्थक अध्यायानुक्रम, शब्दप्रयोग आ व्याख्यासँ सम्बन्धित अछि। प्राथमिक पञ्जीक स्वतन्त्र मूल-पृष्ठ, दिनाङ्कयुक्त प्रमाण, संस्कृत/तिरहुता समांतर संस्करण, आनुवंशिक प्रयोगशालाक आँकड़ा आ अभिलेखित व्यक्तिसभक आजुक वंशजक विषयमे स्वतंत्र प्रमाणन एतय नहि कएल गेल अछि।

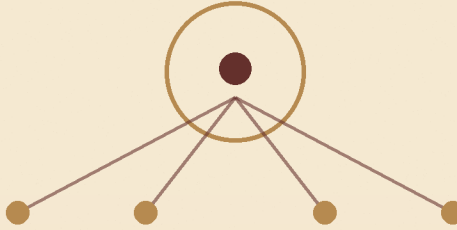
ग्रन्थसूची

ठाकुर, गजेन्द्र । Decoding the Panji of Mithila, Volume I । उपलब्ध
मूल ग्रन्थ-पाठ ।

प्रथम मूल ग्रन्थक आँकड़ा-परिशिष्ट । प्रथम मूल पुस्तकक परिशिष्ट-
संचिका ।

पञ्जी-प्रबन्ध

वंश, गोत्र, मूल, विवाहसम्बन्ध आ ऐतिहासिक स्मृतिक
सैद्धान्तिक अध्ययन। पञ्जीकेँ सामाजिक अभिलेखक
रूपमे पढ़ैत ई आलोचना पाठ-साक्ष्य आ
आनुवंशिक उपमानक प्रमाण-सीमा स्पष्ट करैत अछि।



विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X



www.videha.co.in



Videha GitHub